भारत मे चमार जाति के परिवारिक स्थितिः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

स्वराज सिह,शोधकर्ता,

समाजशास्त्र विभाग,डी0ए0वी0(पी0जी0)कालेज, देहरादून

Abstract

हमारे देश मे अस्पृश्य जातियाँ मे से एक उपजाति (चमार) लम्बे समय तक अत्यधिक अमानवीय शोषण का शिकार रही है यधपि 20 वीं शताब्दी के आरम्भिक काल मे किये गये सुधार प्रयत्नो एवं स्वतंत्रता के पश्चात बने सामाजिक विधानो के फलस्वरूप आज इन समस्याओ को कम कर दिया गया है परन्तु व्यवहार मे आज भी इनके जीवन मे अनेक समस्याएँ किसी न किसी प्रकार से जुडी है भारत मे जब तक स्मृतिकालीन की प्रधानता रही चमार जाति पर मनमाने ढंग से अत्याचार किये जाते रहे आज जबकि हम एक शोषणमुक्त समालज एवं न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करने हकतु अग्रसर है तब की न्याय एवं समानता के आरक्षण का विरोध होनक लगा है इसलिए समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह जानना व्यापक आवश्यक है किन किन कारण चमार जाति के सामाजिक आर्थिक जीवन मे परिवर्तन आ रहा है यह लेख चमार जाति की स्थिति को उजागर करने की दिशा मे एक प्रयास है।

Figure:00 References:07 table:10

Key Words: भारतीय समाज चमार जाति की परिवारिक स्थिति

किसी भी देश का विकास एवे प्रगति मे विभिन्न धर्मो एंव जातियो की महत्वपूर्ण भूमिका हाती है देश का भविष्य उसमे निवास करने वाले धर्मो एवं जातियो के लोगो का परिवारिक एवं आर्थिक विकास निहित है उसमे निवास करने वाले धर्मो एवं जातियो के लोगो का समुचित परिवारिक एवं आर्थिक विकास करके ही वास्तविक अर्थो मे विकास की संकल्पनाओं को पूरा किया जा सकता है धर्मो एवं जातियो के विकास मे सामाजिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

परिवार भारतीय सामाजिक जीवन केन्द्रीय ईकाई है परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विचार, रक्त अथवा गोद लेने के सम्बन्धों से संगठित है तथा एक छोटी गृहस्थी का निर्माण व देख–रेख करते हैं और पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र–पुत्री, भाई–बहन के रूप में अन्तः किया करते हैं। विवाह परिवार एवं पारिवारिक जीवन की एक आधारशिला मानी जाती है। विवाह एक प्रवजनन मूलक परिवार की स्थापना की विधि है चमारों के सन्दर्भ में परम्परागत निषेधों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह एक से अधिक विषमलिंगियों का लिंग सम्बन्धी नियन्त्रणों के लिए प्रथा, कानून या समाज द्वारा मान्य ऐच्छिक बन्धन ही है क्योंकि पारस्परिक मान्यताओं के अनुसार शूद्रों के लिए विवाह का उद्देश्य एकमात्र यौन सम्बन्धों की पूर्ति तक ही था लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि विवाह सम्बन्धी अन्य प्रभावों एवं मान्यताओं से ये पूर्णतया परित्यक्त हो रहे हो। अन्तर्विवाह गोत्र, सपिण्ड, प्रवर आदि भी प्रभावी है अर्थात् चमार विवाह भी एक पवित्र संस्था है, जो कि धार्मिक विधि संस्कार एवं उत्सवों द्वारा सम्पन्न होते हैं। द्विजों में उल्लेखित विवाह के आठ प्रकारों में असुर विवाह ही इनमें प्रचलित होता था इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि चमारों में विवाह का प्रकार संरचना एवं संस्कार आदि द्विजों की अपेक्षा निम्न है। वर्तमान में विभिन्न सामाजिक विधानों के निर्माण एवं आधुनिक शक्तियों के प्रभाव के कारण विवाह में परिवर्तन हुए हैं। किन्तु शहरी विवाहों की तुलना में गाँव से यह परिवर्तन कम ही घटित हुए हैं और काफी मात्रा में विवाह का परम्परागत स्वरूप अब भी बना हुआ है। अधिकांशतः उच्च जातियों एवं वर्ग से सम्बन्धित निष्कर्ष प्रदान करते हैं, इन अध्ययनों में निम्न तथ्य अनुसूचित जातियों के बारे में कहीं तुलनात्मक विवरण प्राप्त होते हैं। ऐसे अध्ययन जो अनुसूचित जातियों के परिवार एवं

विवाह सम्बन्धी प्रकृति एवं स्वरूपों पर प्रकाश डालते हैं, बहुत कम हैं और ऐसे अध्ययन जो केवल चमार जाति के परिवार एवं विवाह सम्बन्धी दशाओं का विश्लेषण करते हैं लगभग नगण्य हैं।

शोध का उद्देश्यः– प्रस्तुत शोध में चमार जाति के परिवारें एवं विवाह सम्बन्धी दशा का विवरण किया गया है। विश्लेषण का मूल उद्देश्य चमार जाति की पारिवारिक संरचना एवं वैवाहिक स्थिति सम्बन्धी तथ्यों का पता लगाना है प्रस्तुत अध्ययन को तीन भागों में विभाजित करके अध्ययन किया गया है।

प्रथम – व्यक्तिगत एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

द्वितीय – व्यवहारिक पृष्ठभूमि

तृतीय – विवाह सम्बन्ध विस्तार एवं कुछ अन्य पक्ष

सर्वप्रथम विश्लेषण उनकी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का किया गया है।

परिवारिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

व्यक्तिगत एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि :– इसके अन्तर्गत उत्तरदाताओं की आयु उपजाति परिवार का स्वरूप, परिवार का आकार एवं परिवार टूटने के कारण आदि का विश्लेषण किया गया है।

आयु :– आयु मानव समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है एवं जैवकीय विशेषता होते हुए भी समाज में आयु व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक एवं वैधिक विकास का मापदण्ड मानी गयी है। यह सामाजिक स्थिति एवं भूमि का तथा व्यक्ति के व्यवहारिक बोध पर विशिष्ट कारक है, क्योंकि आधुनिक स्थिति आर्थिक व्यवसाय वर्गों में प्रवेश के लिए शिक्षा एवं आयु सीमाएँ निर्धारित करता है। इसके अतिरिक्त भारतीय ग्रामीण समाज में वह पद और प्रतिष्ठा का भी महत्वपूर्ण आधार है। राजनैतिक नेतृत्व जिसे निभाने के लिए परिपक्व तथा अनुभव आवश्यक तत्व ही में भी आयु की महत्वपूर्ण भूमिका है।

उत्तरदाताओं की आयु से सम्बन्धित तथा सारणी 01 में संकलित किये गये हैं। तथ्यों को देखने से स्पष्ट होता है कि 37.0 प्रतिशत 31 से 45 वर्ष, 36.2 प्रतिशत 18 से 30 वर्ष एवं 26.8 प्रतिशत 46 से 60 वर्ष आयु वाले उत्तरदाता है। तथ्य सारणी देखने से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के युवा होने की आयु से वृद्ध अवस्था तक के उत्तरदाताओं द्वारा सूचनाओं को एकत्रित किया गया।

सारणी संख्या –01

उत्तरदाताओं की आयु

आयु वर्षों में	आवृत्ति	प्रतिशत
18–30	181	36.2
31–45	185	37.0
46–60	134	26.8
योग	**500**	**100.0**

उपजाति :– चमार जाति में ही भिन्न–भिन्न नाम वाली उपजाति है। धुर्वे के अनुसार एक जाति द्वारा जो वैकल्पिक नाम धारण किये हैं उनमें न केवल चमार है इसके नाम से भिन्न–भिन्न (रविदास, नोना चमार, चमरिया आदि) के नाम से भी जाना जाता है। (धुर्वे, 1961 : 203) चमारों की भिन्न–भिन्न उपजातियों का नाम पढ़ाने के कारण यह मत है कि इनकी स्त्रियाँ दाई का काम करती हैं। यद्यपि ऐसा नहीं है कि यह कार्य अन्य उपजातियां न करती हों (धुर्वे, 1961:36)

सारणी संख्या –02
उत्तरदाताओं की उपजातियाँ

उपजातियाँ	आवृत्ति	प्रतिशत
रैदासी	8	1.6
उपजाति नहीं है	492	98.4
योग	**500**	**100.0**

सारणी 02 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में प्रायः उत्तरदाताओं की उपजातियों से सम्बन्धित है, जो कि हरिद्वार जिले में ज्यादा देखने को नहीं मिली है। यहाँ मात्र 1.6 प्रतिशत रैदासी ही मिलते हैं तथा शेष चमार जाति की कोई उपजाति नहीं है वह चमार जाति के नाम से ही जाने जाते हैं। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में उपजाति दृष्टिकोण से चमार जाति की कोई उपजाति नहीं है मात्र जो 1.6 प्रतिशत रैदासी पाये जाते हैं वह भी चमार नहीं ही है जिन्होंने सत्संग ग्रहण कर रैदासी बन गये हैं

परिवार का स्वरूप :–

उत्तरदाताओं से स्वयं, पिता तथा दादा के परिवार के स्वरूप के बारे में पूछा गया। इससे सम्बन्धित तथ्य सारणी 03 में संकलित किये गये हैं। तथ्यो के अनुसार 61.0 प्रतिशत उत्तरदाता स्वयं एकांकी परिवारों तथा 39.0 प्रतिशत संयुक्त परिवार से सम्बन्धित है, परन्तु 51.4 प्रतिशत के पिता का तथा 80.2 प्रतिशत के दादा के परिवार संयुक्त थे।

सारणी संख्या 03
उत्तरदाताओं के स्वयं, पिता एवं दादा के परिवारों का स्वरूप

परिवार का स्वरूप	संयुक्त	एकांकी	योग
स्वयं	195 (39.0)	305 (61.0)	500 (100.0)
पिता	257 (51.4)	243 (49.6)	500 (100.0)
दादा	401 (80.2)	99 (19.8)	500 (100.0)

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि यद्यपि अधिकांश चमार जाति में स्वयं का परिवार एकांकी है। परन्तु नेतृत्व दृष्टिकोण से यह ऐसे परिवारों से आते हैं जिनमें पिता एवं दादा पीड़ियों में संयुक्त परिवारों का प्रभुत्व रहा हैं दूसरे तथ्यों में यह कहा जा सकता है कि अधिकता, सूचनादाताओं के स्वयं का परिवार भले ही एकांकी है, परन्तु मुख्यतः ये संयुक्त परिवारों के सदस्य रहे हैं।

परिवारों का आकार :–

परिवार के आकार में केवल उन्हीं सदस्यों की गणना की गयी है जो उत्तरदाताओं के परिवार के साथ गुजर करते हैं। उत्तरदाताओं के परिवार के आकार से सम्बन्धित तथ्य सारणी 04 में संकलित किये गये हैं। तथ्यों को देखने से स्पष्ट होता है कि 45.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में 1 से 4 सदस्य, 46.8 प्रतिशत के 5 से 8, 7.6 प्रतिशत के 9 से 12 सदस्य निवास करते हैं। विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से यदि 8 सदस्यों के परिवार को लघु परिवार तथा 8 से ऊपर सदस्यों वाले परिवार को बड़ा परिवार माना जाये तो यह स्पष्ट होता है कि चमार जातियों में लगभग 10 में से 9 से अधिक लघु परिवारों में रहते हैं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह विपरीत है। क्योंकि प्रायः अध्ययनों में यह तथ्य सामान्य पाया गया है कि अधिकांश चमार जाति के परिवार बड़े होते हैं – परन्तु आस्कर लेविस (1758), वासु (1962) कपाड़िया 1966 तथा योगेन्द्र सिंह (1970) के अध्ययनों के अनुसार निम्न जातियों की अपेक्षा उच्च जातियों में संयुक्त परिवार का बाहुल्य अधिक है

सारणी संख्या 04
उत्तरदाताओं के परिवार का आकार

परिवार का आकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1–4 सदस्य	228	45.6
5–8 सदस्य	234	46.8
9–12 सदस्य	38	7.6
13–16 सदस्य	–	0.0
17–19 सदस्य	–	0.0
योग	**500**	**100.0**

वर्तमान भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवार आज ही नहीं विघटित हो रहा है प्रारम्भिक उत्तर वैदिकयुगीन पारिवारिक जीवन में विघटन की प्रक्रिया का सकल मात्त्य शब्द के अर्थ परिवर्तन में भी होता हैं मातृव्य शब्द का अर्थ छोटा भाई है। (रिवटने के अर्थवेद 2.185 का अनुवाद)। अर्थवेद में इसकी गणना पाण्डवों में की गयी है। (अथर्ववेद 10.3.9 : 5.22.12) उत्तर वैदिक युग की संयुक्त परिवार व्यवस्था के वाक्य के कई महत्वपूर्ण कारण थे। सबसे प्रबल कारण आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन का, परन्तु धीरे–धीरे वाणिज्य और शिक्षयों का विकास होने लगा, जिसके कारण व्यापारिक प्रगति एवं लघु उद्योग–धन्धों के विकास में परिवार से अलग होकर जीवकोपार्जन करना सरल एवं स्वाभाविक हो गया। कुछ विद्वानों में धर्मवाद के सिद्धान्त के विकास को भी पारिवारिक चिह्न या कारण माना है। (सर्वाधिकारी : प्रिंसिपल ऑफ हिन्दु ला ऑफ इनहेरिटेन्स, पृ0 55)। पारिवारिक वाद में स्त्रियों का प्रमुख रूप से हाथ रहा है। स्त्रियों को फूट डालने वाला कहा गया है। वर्तमान भारतीय सामाजिक व्यवस्था में परिवार का आकार दिन प्रतिदिन लघुतम होता जा रहा है। अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ रहकर एक अलग परिवार बसाने की लालसा में तल्लीन ''लघु ही सुन्दरतम है'' का अनुसरण करते हुए चमार जाति के युवा वर्ग का दृष्टिकोण परिवार के एकांकी स्वरूप की ओर उन्मुख दिखाई दे रहा है।

परिवार के विघटन :–

परिवार के विघटन सम्बन्धित तथ्य सारणी 3.7 में संकलित किये गये हैं। तथ्यों को देखने से स्पष्ट होता है कि 82.4 प्रतिशत देवरानी–जेठानी के बीच झगड़ा होने के कारण, 58.6 प्रतिशत भाई–भाई के बीच झगड़ा होने से, 40.6 प्रतिशत बेरोजगारी के कारण, 37.2 प्रतिशत व्यवसाय एवं आर्थिक सम्बन्धी झगड़े के कारण तथा 34.2 प्रतिशत अशिक्षा एवं निर्धनता के कारण परिवारमें विघटन पैदा होता है। इसके साथ ही साथ पति–पत्नी के बीच झगड़ा, पड़ोस का सूचित व्यवसाय, बुरी संगत तथा स्वस्थ मनोरंजन का अभाव भी परिवार विघटन के कारक के रूप में सिद्ध होते हैं।

सारणी संख्या 3.7
परिवार टूटने के कारण पर उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण

परिवार टूटने का कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
पति–पत्नी के बीच झगड़ा	72	14.4
भाई–भाई के बीच झगड़ा	293	58.6
देवरानी–जेठानी के बीच झगड़ा	412	82.4
व्यवसाय एवं आर्थिक सम्बन्धी झगड़ा	186	37.2
अशिक्षा एवं निर्धनता	171	34.2
बुरी संगत	122	24.4
स्वस्थ मनोरंजन का अभाव	93	18.6
बेरोजगारी	203	40.6
पड़ोस का दूषित वातावरण	49	9.8

वैवाहिक पृष्ठभूमि

इसके अन्तर्गत वैवाहिक स्थिति, विवाह स्थान, विवाह स्थान दूरी, वैवाहिक आयु तथा वैवाहिक दशा आदि का विश्लेषण किया गया है।

सारणी संख्या 3.8

(A) उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति,

वैवाहिक स्थिति	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
अविवाहित	9	1.8
विवाहित	462	92.4
विधुर	29	5.8
योग	**500**	**100.00**

(B) विवाह स्थान

आस–पास के गाँव	403	80.6
आस–पास के नगर	97	19.4
योग	**500**	**100.00**

(C) विवाह स्थान दूरी (किलोमीटर में)

1–5	232	46.40
6–10	141	28.20
11–15	67	13.40
16–20	43	8.60
21–25	17	3.40
योग	**500**	**100.00**

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति, विवाह स्थान तथा विवाह स्थान दूरी से सम्बन्धित तथ्य सारणी 3.8A में संकलित किये गये हैं। तथ्यों को देखने में परिलक्षित होता है कि सम्पूर्ण उत्तरदाताओं में से 92.4 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित, 1.8 प्रतिशत अविवाहित तथा 5.8 प्रतिशत ऐसे उत्तरदाता से जिनकी पत्नियों का निधन हो जाने से वे विधुर हो गये हैं।

विवाह स्थान से सम्बन्धित 3.8B के तथ्यों को देखने से स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण विवाहित उत्तरदाताओं में से अधिकांश (80.6 प्रतिशत), उत्तरदाताओं का विवाह आस–पास के गाँव में तथा शेष 19.4 प्रतिशत का विवाह आस–पास के नगर में हुआ है।

विवाह स्थान दूरी से सम्बन्धित 3.8C के तथ्यों को देखने से परिलक्षित होता है कि विवाहित उत्तरदाताओं में से 46.4 प्रतिशत का विवाह 1 से 5 किमी0, 28.2 प्रतिशत का 6 से 10 किमी0, 13.4 प्रतिशत का 11 से 15 किमी0, 8.6 प्रतिशत का 16 से 20 किमी0 तथा मात्र 3.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं का विवाह 21 से 25 किमी0 की दूरी पर सम्पन्न हुआ है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में लिये गये अधिकांश (90.8 प्रतिशत) उत्तरदाता विवाहित है। विवाहित उत्तरदाताओं में से अधिकांश 88.77 प्रतिशत का विवाह आस–पास के गाँव में हुआ है। वैवाहिक दूरी के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि तीन चौथाई से अधिक (82.16 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का विवाह 10 किमी0 के अन्तर्गत हुआ है अर्थात् आज भी चमारों में शादी करने का जो रूप मिल रहा है, वह सीमित दायरे में है।

परिवार नियोजन :–

परिवार नियोजन से सम्बन्धित तथ्य सारणी 3.36 में संकलित किये गये हैं। तथ्यों को देखने से स्पष्ट होता है कि लगभग तीन चौथाई (74.8 प्रतिशत) उत्तरदाता परिवार नियोजन के पक्ष में हैं। 25.2 प्रतिशत ऐसे भी उत्तरदाता मिले हैं, जो इसके पक्ष में नहीं हैं। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि सरकार द्वारा चलाया गया यह अभियान लोगों के दिलो–दिमाग में धीरे–धीरे

बैठता जा रहा है कि अगर आराम के साथ जीवन व्यतीत करना है तो परिवार नियोजन को बढ़ावा देना होगा।

सारणी संख्या 3.36
परिवार नियोजन के प्रति दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	374	74.8
नहीं	126	25.2
योग	**500**	**100.0**

सार ग्रंथ सूची

Agarwal, S.N. The age of Marriage in India, Population Index Vol.-2 1957

Alexander, K.C. Changing Status of Pulaya Harijans of Kerala, Economic & Political Weekly (Special Number) July 1071-75, 1968

Almond, G.A. and Coleman, J.S. The Politics of Developing Areas, Frineaton University Press, Princeston, 1960

Atal Yogesh Local Community and National Politics, National Publishing House, Delhi, 1971.

Atal, Y. The Changing Frontiers of Caste, New Delhi : National, 1968

Baranbas, A.P. Caste in Changing India, The Indian Institute of Public Administration New Delhi, 1965.

Basu, Tara Krishna and Bose Village Life in Bengal : In Richard Stevenson (ed.)

Basanta Coomar Village Life in Bengal : Hindu Customs in Bengal. USA : Universe, 2005

Belley, F.G. Caste and the Economic Frontier, Oxford University Press, Bombay, 1958.

Belley, F.G. The Joint Family in India : A Frame Work for Discussion, The Economic Weekly, Vol.-XII, No.-8, 1980.

Beteille Andre Family and Social Change in Indian (The Economics Weeks 1966)

Beteillie Andre Caste, Class and Power, New Delhi : Oxford University Press, 1996

Bhardwaj, A.N. Problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribes in India, Light and Life Publishers, New Delhi, 1979

Chanana and Dev Raj "Caste and Mobility", Economic Weekly, Vol. 4, No. 24, June 1969

Chandrasekharaiyah, K. "Mobility Pattern Within the Caste" Sociological Bulletin, Vol. XI Nos. 1-2, 1962